अटारी, कोलकाता द्वारा *सतत कृषि विकास को उचित रूप से समर्थन देने के लिए विस्तार में आदर्श बदलाव* पर संगोष्ठी आयोजित

29 सितंबर, 2023, कोलकाता

भाकृअनुप- कृषि प्रौद्योगिकी अनुप्रयोग अनुसंधान संस्थान, कोलकाता ने कृषि विज्ञान केंद्र प्रणाली में उत्प्रेरित परिवर्तन लाने के लिए शुरू की गई संगोष्ठी श्रृंखला के तहत सतत कृषि विकास को उचित रूप से समर्थन देने के लिए विस्तार में आदर्श बदलाव पर एक संगोष्ठी आज हाइब्रिड मोड में आयोजन किया। कार्यक्रम की शुरुआत हरित क्रांति के प्रणेता डॉ. एम.एस. स्वामीनाथन के निधन पर शोक व्यक्त करने के लिए दो मिनट के मौन के साथ हुई। अटारी कोलकाता के वैज्ञानिकों के अलावा पश्चिम बंगाल, ओडिशा, बिहार, झारखंड और उत्तर पूर्वी क्षेत्र के कृषि विज्ञान केंद्र के वैज्ञानिकों ने भाग लिया।

अपने व्याख्यान में प्रसिद्ध विस्तार विशेषज्ञ डॉ. पुरंजन दास, पूर्व उप महानिदेशक (कृषि विस्तार), आईसीएआर ने पिछली सदी में दुनिया भर में कृषि विस्तार प्रणाली में घटित हुआ परिवर्तनों के बारे में बताया। उन्होंने विस्तार की अपेक्षित भूमिका पर भी बात की और टिकाऊ खाद्य उत्पादन प्रणाली के लिए स्मार्ट कदम उठाने की आवश्यकता पर जोर दिया। उन्होंने बदलते प्रतिमान को ध्यान में रखते हुए विस्तार विशेषज्ञों को पुनः उन्मुख करने के लिए ऐसे सेमिनार आयोजित करने के लिए अटारी, कोलकाता के प्रति गहरी संतुष्टि व्यक्त की। उन्होंने जलवायु परिवर्तन के युग में समुदाय-आधारित अनुकूलन तंत्र को मुख्यधारा में लाने पर जोर दिया।

संस्थान के निदेशक तथा संगोष्ठी श्रृंखला के संयोजक डॉ. प्रदीप डे ने अपने स्वागत भाषण में अमृत काल के दौरान कृषि-विस्तार की रणनीतियों के बारे में बताया और आशा व्यक्त की कि इन कार्यक्रमों के आयोजनों से विस्तार प्रणाली को दुरुस्त करने में मदद मिलेगी। उन्होंने क्षेत्र में कृषि उत्पादन प्रणाली में विपणन योग्य अधिशेष मुद्दों का समाधान, पारिस्थितिक तंत्र का संतुलन और किसानों को बेहतर रिटर्न प्राप्त करने में विस्तार विशेषज्ञों को प्रेरित किया।

तदुपरांत 'वन हेल्थ' और विस्तार अनुसंधान में आगे बढ़ने की राह पर चर्चा की गई। प्रश्नोत्तरी सत्र के दौरान प्रतिभागियों की शंकाओं का समाधान भी किया गया। बैठक में संस्थान के सभी वैज्ञानिकों और क्षेत्र के सभी कृषि विज्ञान केंद्र प्रमुखों तथा विस्तार विशेषज्ञों ने भाग लिया। डॉ. पी.पी. पाल, प्रधान वैज्ञानिक ने कार्यक्रम का संचालन किया और डॉ. अभिजीत हालदार, प्रधान वैज्ञानिक ने धन्यवाद ज्ञापित किया।